8

वाक्य-व्यवस्था

भाषा की मुख्य इकाई वाक्य है, जिससे किसी भाव को पूर्णरूप से व्यक्त किया जा सकता है। इस कथन में 'दो बातें' दिखाई देती हैं-

1. वाक्य शब्दों की वह इकाई है जो रचना की दृष्टि से अपने-आप में स्वतंत्र है।
2. वाक्य किसी विचार, भाव या मंतव्य को पूर्णतया प्रकट करता है।

इस प्रकार वाक्य पदों का वह व्यवस्थित समूह है, जिसमें पूर्ण अर्थ देने की शक्ति है।

वाक्य के अंग

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए-

1. रमेश पुस्तक पढ़ता है।
2. कृष्ण कुमार कहानी लिखता है।

उपर्युक्त वाक्यों में दो अंग हैं। एक अंग कर्ता के बारे में सूचना देता है: जैसे-रमेश, कृष्ण कुमार। दूसरा अंग क्रिया के बारे में सूचना देता है: जैसे-पढ़ता है, कहानी लिखता है।

उपर्युक्त वाक्यों में पहला अंग उद्देश्य कहलाता है दूसरा विधेय। इस प्रकार वाक्य के दो अंग हैं- उद्देश्य और विधेय।

उद्देश्य वाक्य का वह अंग होता है, जिसके बारे में कुछ कहा जाता है। उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय होता है: जैसे-

उद्देश्य	**विधेय**
मेरा भाई	होशियार है।
सुरेश	को बुखार है।

कई बार वाक्य में प्रकट रूप में उद्देश्य दिखाई नहीं देता। आज्ञासूचक वाक्य देखिए-

उद्देश्य	**विधेय**
(तुम)	वहाँ मत जाओ।
(आप)	खाना खाइए।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में उद्देश्य का लोप है। 'तुम' और 'आप' के बिना भी ये वाक्य पूर्ण हैं। इसीलिए तुम और आप को कोष्ठक में रखा गया है अर्थात् ये दोनों अंग वाक्य में अप्रकट रूप में निहित हैं।

इसी प्रकार कई वाक्यों में प्रकट रूप में विधेय भी दिखाई नहीं देता: जैसे-

कोई पूछता है दिल्ली कौन गया है ?

उत्तर मिलता है- 'मोहन'।

उत्तर वाक्य में पूरा वाक्य बनता है 'मोहन दिल्ली गया है।' किंतु 'दिल्ली गया है' विधेय का लोप है। विधेय का यह अंग अप्रकट रूप में वाक्य में निहित है।

उद्देश्य और विधेय एक-एक पद के भी हो सकते हैं और एक से अधिक पदों के भी। उदाहरण के लिए-

	उद्देश्य	विधेय
1.	मोहन	जाता है।
2.	मेरा भाई मोहन	स्कूल जाता है।
3.	मेरा छोटा भाई मोहन	प्रतिदिन दोपहर को स्कूल जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों के वाक्य (2) और (3) के उद्देश्य 'मेरा भाई मोहन' तथा 'मेरा छोटा भाई मोहन' वाक्य (1) के उद्देश्य 'मोहन' के विस्तार हैं और विधेय 'स्कूल जाता है' और 'प्रतिदिन दोपहर को स्कूल जाता है' वाक्य (1) के विधेय जाता है के विस्तार हैं।

इस प्रकार वाक्य छोटा हो या बड़ा, उसके दो ही अंग होते हैं- एक, उद्देश्य और दूसरा, विधेय। उद्देश्य प्राय: वाक्य के प्रारंभ में होता है और विधेय उद्देश्य के बाद में। उद्देश्य और विधेय में कर्ता और क्रिया अनिवार्य अंग हैं। किंतु इनमें कर्म, पूरक, अधिकरण आदि की भी आवश्यकता रहती है: जैसे-

1. ईश्वर है।
2. मोहन डॉक्टर है।
3. शीला सेब खाती है।
4. वह घर में है।
5. मोहन ने सोहन को किताब दी।

उपर्युक्त वाक्य मूलभूत वाक्य हैं, क्योंकि इनको छोटा करने पर अर्थ स्पष्ट नहीं होगा। इन वाक्यों का विस्तार किया जा सकता है।

वाक्य-रचना

वाक्य शब्दों या पदों का मात्र समूह नहीं होता है। प्रत्येक वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक पद किसी-न-किसी संबंध से परस्पर जुड़ा रहता है। यह संबंध ही पदों के समूह को वाक्य का रूप प्रदान करता है। इस संबंध को दो प्रकार से समझा जा सकता है- (1) पदक्रम और (2) अन्विति। वाक्य-रचना की दृष्टि से ये दोनों तत्त्व अनिवार्य हैं।

पदक्रम

वाक्य में कर्ता, कर्म, पूरक, क्रिया, क्रियाविशेषण आदि पर सामान्य रूप से जिस क्रम में आते हैं, उसको पदक्रम कहते हैं। पदक्रम सभी भाषाओं में एक जैसा नहीं होता। हिंदी में सामान्य पदक्रम कर्ता + कर्म + क्रिया है। अर्थात् कर्ता आता है, फिर कर्म और अंत में क्रियापद आता है। उदाहरण के लिए-

मोहन सेब खाता है।

उपर्युक्त वाक्य में 'मोहन' कर्ता है, 'सेब' कर्म और 'खाता है' क्रिया पद।

हिंदी वाक्य-रचना में पदक्रम का बड़ा महत्तव है। पदक्रम में थोड़ा-सा परिवर्तन हो जाने पर अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है: जैसे-

मोहन श्याम को पीटता है।

उपर्युक्त वाक्य में संज्ञापदों का क्रम उलट देने पर वाक्य बनेगा-

'श्याम मोहन को पीटता है।'

इससे मूल वाक्य का अर्थ ही बदल जाएगा। इसी प्रकार 'पीटता है श्याम को मोहन यह वाक्य अस्पष्ट है और कोई अर्थ नहीं देता। इसलिए वाक्य रचना में उचित पदक्रम का विशेष ध्यान रखा जाता है।

जिन वाक्यों में दो कर्म होते हैं, उनमें प्राय: पहले गौण कर्म (या संप्रदान) और बाद में मुख्य कर्म आता है: जैसे-

शीला ने रमा को अपनी कार बेची। ('रमा' गौण कर्म, 'कार' मुख्य कर्म)

संबोधन तथा विस्मयसूचक शब्द वाक्य से पहले प्रयुक्त होते हैं: जैसे-

1. अहा! बहुत सुंदर दृश्य है।
2. शर्मा जी! मैं कल कार्यालय नहीं आ पाऊँगा।

कई बार पदक्रम में परिवर्तन करने से अर्थ तो नहीं बदलता, किंतु वाक्य के जिस अंश पर हम बल दोना चाहते हैं, वह थोड़ा बदल जाता है। अत: वाक्य के किसी पद पर विशेष

बल देने के लिए हम हिंदी में कभी-कभी उस पद को पहले स्थान पर ले जाते हैं या पदक्रम में थोड़ा-सा हेर-फेर कर देते हैं: जैसे-

1. आपको कहाँ जाना है ?
2. कहाँ जाना है आपको ?

उपर्युक्त वाक्यों में वाक्य (1) सामान्य वाक्य है, जिसमें पदक्रम व्यवस्थित है। वाक्य (2) में 'कहाँ' पद पहले आया है। यहाँ स्थान-विशेष की जानकारी प्राप्त करने पर बल दिया गया है।

पदक्रम में अधिकतर अशुद्धियाँ विशेषणों के प्रयोग में होती हैं: जैसे-

1. (क) यहाँ असली गाय का दूध मिलता है। (अशुद्ध)
   (ख) यहाँ गाय का असली दूध मिलता है। (शुद्ध)
2. (क) कई रेलवे के कर्मचारियों की गिरफ़्तारी हुई। (अशुद्ध)
   (ख) रेलवे के कई कर्मचारियों की गिरफ़तारी हुई। (शुद्ध)
3. (क) मुझे एक चाय का पैकेट चाहिए। (अशुद्ध)
   (ख) मुझे चाय का एक पैकेट चाहिए। (शुद्ध)

अन्विति

जब वाक्य के किसी एक संज्ञापद के लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के अनुसार किसी दूसरे पद में समान परिवर्तन हो जाता है तो उसे उन्विति कहते हैं। हिंदी वाक्यों में कर्ता या कर्म के साथ क्रिया का, संज्ञा या सर्वनाम के साथ विशेषण का तथा संबंध (कारक) का संबंधी से अन्वय होता है। हिंदी में अन्विति के दो मुख्य क्षेत्र हैं:

1. कर्ता और कर्म तथा क्रिया के बीच अन्विति

(क) कर्ता-क्रिया अन्विति:

(i) यदि कर्ता और कर्म के बाद किसी परसर्ग (कारक चिह्न्) का प्रयोग न हुआ हो तो क्रिया की अन्विति कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है: जैसे- (1) गौरव दूध पीता है। (2) मुदिता दूध पीती है। (3) लड़के दूध पीते हैं। (4) लड़कियाँ दूध पीती हैं।

(ii) यदि वाक्य में कर्ता के बाद परसर्ग का प्रयोग न हुआ हो और कर्म के बाद परसर्ग का प्रयोग हो, तब भी क्रिया की अन्विति कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष आदि के अनुसार होगी, जैसे 1. मोहन शीला को डाँटता है। 2. शीला कुत्ते को डराती है। 3. लड़कियाँ बिल्ली को भगा रही हैं। 4. लड़के कुत्तों को मार रहे हैं।

इन दोनों नियमों को आरेख द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है:

(अ) कर्ता कर्म क्रिया

(परसर्ग रहित) (परसर्ग रहित)

(आ) कर्ता कर्म क्रिया

(परसर्ग रहित) (परसर्ग सहित)

(ख) कर्म-क्रिया अन्विति: यदि कर्ता के बाद 'ने' अथवा कोई और पसर्ग हो तो क्रिया की अन्विति कर्ता के साथ नहीं होती। इस स्थिति में कर्म या पूरक के बाद किसी परसर्ग का प्रयोग न हुआ हो तो क्रिया की अन्विति कर्म या पूरक के लिंग, वचन, पुरूष आदि के अनुसार होगी: जैसे-

1. मोहन ने रोटी खाई। (कर्म-क्रिया)
2. नम्रता ने दूध पिया। (कर्म-क्रिया)
3. मोहन ने चिट्ठियाँ लिखीं। (कर्म-क्रिया)
4. शीला ने सभी फल खाए। (कर्म-क्रिया)
5. बच्चों को तेज़ बुखार था। (पूरक-क्रिया)
6. मुझ को नींद आ रही थी। (पूरक-क्रिया)

('बच्चों' और 'मुझ' के साथ 'को' लगने पर भी वे दोनों कर्ता कारक हैं।)

इस नियम को आरेख से समझा जा सकता है:

कर्ता कर्म/पूरक क्रिया

(परसर्ग सहित) (परसर्ग रहित)

(ग) निरपेक्ष अन्विति : यदि वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों के बाद परसर्ग हो तो क्रिया की अन्विति न तो कर्ता के साथ होगी और न ही कर्म के साथ। इस स्थिति में क्रिया हमेशा एक वचन पुल्लिंग में होती है। यहां अन्विति निरपेक्ष है: जैसे-

1. शीला ने नौकर को बहुत डाँटा।
2. मैंने शीला को डराया।

3. अध्यापक ने सभी छात्रों को बुलाया।

4. कुत्तों ने बिल्लियों को भगाया।

इसे आरेख द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है:

कर्ता	कर्म	क्रिया
(परसर्ग सहित)	(परसर्ग सहित)	

2. **संज्ञा-सर्वनाम अन्विति :** वाक्य में प्रयुक्त सर्वनामों के लिए वचन उन्हीं संज्ञाओं के अनुसार होते हैं, जिनके स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग होता है: जैसे-

(क) रमेश मेरा भाई है। वह हमारे स्कूल में पढ़ता है।

(ख) मेरी बहन सुशीला है। वह आज स्कूल नहीं आई।

3. **विशेषण-विशेष्य अन्विति**

(क) यदि विशेष्य (संज्ञा) के पहले या बाद में विशेषण का प्रयोग हो तो आकारांत विशेषण विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार प्रभावित होगा: जैसे- काला बैल, काली गाय, बड़े लड़के, बड़ा लड़का, बड़ी लड़की, आदमी मोटा, औरत मोटी।

(ख) अन्य सभी विशेषण विशेष्य के लिंग, वचन आदि के अनुसार न बदलकर एक समान ही रहेंगे। जैसे- सुंदर लड़का, सुंदर लड़की, सुंदर लड़के, सुंदर लड़कियाँ, परिश्रमी छात्र, परिश्रमी छात्राएँ।

4. **संबंध-संबंधी अन्वय**

(क) संबंध कारक रूप का लिंग, वचन संबंधी के अनुसार होता है: जैसे-

1. यह मोहन का लड़का है।
2. वह मोहन की पत्नी है।
3. यह मेरी पुस्तक है।
4. सुरेश का खिलौना टूट गया।

(ख) यदि एक ही वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंग और वचन के अनेक संबंधी हों तो क्रिया पुलिंग और बहुवचन में होती है: जैसे-

1. मेरी बहन के पुत्र, पुत्री और पुत्रवधू चेन्नई गए हुए हैं।
2. आजकल मेरे भाई की बेटी और दामाद आए हुए हैं।

वाक्य के घटक

वाक्य के प्रमुख घटक कर्ता और क्रिया हैं। लघुतम-सरल वाक्य में भी क्रिया और कर्ता दो आवश्यक घटक हैं: उदाहरण के लिए-

1. मोहन सो रहा है।

2. मोहन सेब खा रहा है।

वाक्य में 'सोना' क्रिया और सोने वाले व्यक्ति 'मोहन' की भूमिका अनिवार्य है। इसी प्रकार वाक्य (2) में 'खाना' क्रिया के साथ खाने वाले व्यक्ति 'मोहन' तथा खाई जाने वाली वस्तु 'सेब' दोनों की भूमिका अनिवार्य है। अतः 'खाना' क्रिया से बने वाक्य में क्रिया के अतिरिक्त कर्ता और कर्म अनिवार्य घटक हैं। इस प्रकार वाक्य में जिन घटकों के न होने से वाक्य अधूरा होता है और भाव स्पष्ट नहीं होता वह अनिवार्य घटक कहलाता है।

वाक्य के अनिवार्य घटक के अतिरिक्त कुछ ऐसे घटक भी होते हैं जिनके वाक्य में होने से अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है किंतु इनके न होने पर वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से अधूरा नहीं माना जाता है। ऐसे घटक को ऐच्छिक घटक कहते हैं, क्योंकि वाक्य में इन्हें रखना वक्ता की इच्छा पर निर्भर है: जैसे–

1. मोहन सोहन के लिए पुस्तक लाया है।

2. शीला कल शाम को सुरेश के साथ मुंबई जाएगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सोहन' के लिए और 'कल शाम को सुरेश के साथ' घटक रखना आवश्यक नहीं है। इन घटकों को हटा देने से वाक्य में कोई अधूरापन नहीं रहता। अतः ये ऐच्छिक घटक हैं।

पदबंध

कई पदों के योग से बने वाक्यांश को, जो एक ही पद का काम करता है, पदबंध कहते हैं। कई पदों का समूह पदबंध होता है और भाषा में एक सार्थक इकाई के रूप में काम करता है। पदबंध वाक्य का एक अंश होता है। वह स्वयं पद की भाँति वाक्य में प्रयुक्त होता है। पदबंध को 'वाक्यांश' भी कहते हैं: जैसे–

1. सब से तेज़ दौड़ने वाला छात्र जीत गया।

2. यह लड़की अत्यंत सुशील और परिश्रमी है।

3. नदी बहती चली जा रही है।

4. नदी कल-कल करती हुई बह रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में मोटे छपे शब्द कई पदों के योग से बने हैं। ये अनेक पद एक ही पद का काम कर रहे हैं। 'सर्ब से तेज़ दौड़ने वाला छात्र' में पाँच पद हैं किंतु वे मिलकर एक ही पद संज्ञा या कर्ता का कार्य कर रहे हैं। 'अत्यंत सुशील और परिश्रमी' में भी चार पद हैं, किंतु वे मिल कर एक ही पद अर्थात् विशेषण का कार्य कर रहे हैं। 'बहती चली जा रही है'

में भी कई पद हैं किंतु वे सभी मिलकर एक पद अर्थात् क्रिया का काम कर रहे हैं। 'कल-कल करती हुई' में भी कई पद हैं, किंतु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् क्रियाविशेषण का काम कर रहे हैं। कई पदों के योग से बने ये अंश पदबंध कहलाते हैं।

पदंबध मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं।

1. संज्ञा पदबंध	2. विशेषण पदबंध
3. क्रिया पदबंध	4. क्रियाविशेषण पदबंध

1. **संज्ञा पदबंध** - पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हों तो वह संज्ञा पदबंध कहलाता है। यह संज्ञा पदबंध कर्ता, कर्म, पूरक आदि के स्थान पर प्रयुक्त होता है: जैसे-

   1. चार ताकतवर मज़दूर इस भारी चीज़ को उठा पाए।
   2. राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।
   3. अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
   4. आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

   उपर्युक्त चारों वाक्यों में मोटे छपे शब्द संज्ञा पदबंध हैं। वाक्य (1) में संज्ञा पदबंध कर्ता कारक में है। वाक्य (2) में संज्ञा पदबंध कर्मकारक में है। वाक्य (3) में संज्ञा पदबंध संबंध कारक में है और वाक्य (4) में संज्ञा पदबंध वर्तमानकालिक कृदंत (कर्ता कारक) में है।

2. **विशेषण पदबंध** - विशेषण पदबंध के शीर्ष में अथवा अंतिम शब्द विशेषण होता है। अन्य पद उस विशेषण पर आश्रित होते हैं। इसमें प्रमुख रूप से विशेषण होता है। यह पदबंध प्राय: संज्ञा पदों के अंगरूप में कार्य करता है और इसका स्वतंत्र प्रयोग बहुत कम मिलता है: जैसे-

   1. तेज़ चलने वाली गाड़ियाँ प्राय: देर से पहुँचती हैं।
   2. उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।
   3. उसका घोड़ा अत्यंत सुंदर, फुर्तीला और आज्ञाकारी है।
   4. बरगद और पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।

   विशेषण पदबंध वाक्य में अपने विशेष्य के पहले आता है: जैसे- वाक्य (1), (2) और (4)। किंतु कभी-कभी विशेष्य के बाद पूरक के रूप में भी आता है जो अपने-आप में स्वतंत्र होता है: जैसे- वाक्य (3) में।

3. **क्रिया पदबंध** - क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती है। यही क्रिया पदबंध है: जैसे-

1. वह बाज़ार की ओर आया होगा।
2. मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।
3. सुरेश नदी में डूब गया।
4. अब दरवाज़ा खोला जा सकता है।

क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया के साथ कालबोधक सहायक क्रिया, सातत्य बोधक क्रिया, रंजक क्रिया, वाच्यबोधक क्रिया आदि लगते हैं।

4. **क्रियाविशेषण पदबंध** - यह पदबंध मूलतः क्रिया का विशेषण रूप होने के कारण प्रायः क्रिया से पहले आता है। इसमें क्रियाविशेषण प्रायः शीर्ष स्थान पर होता है, अन्य पद उस पर आश्रित होते हैं; जैसे-
    1. मैंने रमा की आधी रात तक प्रतीक्षा की।
    2. उसने साँप को पीट-पीटकर मारा।
    3. छात्र मोहन की शिकायत दबी जबान से कर रहे थए।
    4. सीता गीता से अधिक मेधावी है।
    5. कुछ लोग सोते-सोते चलते हैं।

उपवाक्य

वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य है। वाक्य एक उपवाक्य का हो सकता है और एक से अधिक उपवाक्यों का भी। जहाँ एक उपवाक्य स्वतंत्र रूप में होता है, वह वास्तव में सरल वाक्य ही है। इस दृष्टि से यदि हम इसी सरल वाक्य को दूसरे वाक्य से जोड़कर एक ही वाक्य बना दें तो यह सरल वाक्य एक उपवाक्य कहलाएगा। उदाहरण के लिए-'मेरा भाई मोहन बीमार है' एक सरल वाक्य है। दूसरा उदाहरण है- 'मेरा भाई मोहन बीमार है, इसलिए वह आज स्कूल नहीं आ पाएगा' भी एक वाक्य है, किंतु इसमें दो उपवाक्य हैं- (1) मेरा भाई मोहन बीमार है; (2) वह आज स्कूल नहीं आ पाएगा।

उपवाक्य और पदबंध - उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध है। 'मेरा भाई मोहन बीमार है' उपवाक्य (अथवा सरल वाक्य) है और इसमें 'मेरा भाई मोहन' संज्ञा पदबंध है। पदबंध में अधूरा भाव प्रकट होता है किंतु उपवाक्य में पूरा भाव प्रकट हो भी सकता है और कभी-कभी नहीं भी। उपवाक्य में क्रिया अनिवार्य रहती है जब कि पदबंध में क्रिया का होना आवश्यक नहीं। 'पदबंधों में क्रिया पदबंध की अपनी अलग सत्ता होती है। उदाहरण के लिए-रमेश की बहन शीला तेज़ी से चलती बस से गिर पड़ी और उसे कई चोटें आईं' वाक्य में रमेश की बहन शीला तेज़ी से चलती बस से गिर पड़ी एक उपवाक्य है, किंतु 'रमेश की बहन शीला' संज्ञा पदबंध, 'तेज़ी से चलती बस' क्रियाविशेषण पदबंध और गिर पड़ी क्रिया पदबंध हैं।

उपवाक्य के तीन प्रकार हैं- (क) संज्ञा उपवाक्य, (ख) विशेषण उपवाक्य, और (ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य। इन तीनों प्रकारों का विवेचन आगे 'वाक्यों के प्रकार' में की गई है।

वाक्यों का विभाजन मुख्यतः दो आधारों पर किया जाता है-

(अ) रचना के आधार पर और (आ) अर्थ के आधार पर।

(अ) रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र-वाक्य

1. **सरल वाक्य** - सरल वाक्य में कर्ता, कर्म, पूरक, क्रिया और क्रिया विशेषण घटकों अथवा इनमें से कुछ घटकों का योग होता है। स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य ही सरल वाक्य है। सरल वाक्य में क्रिया यह निश्चित करती है कि वाक्य में कितने घटक होंगे। अकर्मक क्रिया वाले वाक्य में केवल कर्ता होता है। सकर्मक क्रिया वाले वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों होते हैं। इसमें एक ही समापिका क्रिया होती हैः जैसे-

(क) मोहन हँसता है।

(ख) राजेश बीमार है।

(ग) पुलिस ने चोर को पीटा।

(घ) माता जी ने शीला को एक साड़ी दी।

(ङ) सीला आपको अपना बड़ा भाई मानती है।

2. **संयुक्त वाक्य** - संयुक्त वाक्य में दो या अधिक मुख्य अथवा स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं। मुख्य उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए किसी दूसरे उपवाक्य पर आश्रित नहीं रहते। उपवाक्य होते हुए भी उनमें पूर्ण अर्थ का बोध होता है। इनके बीच समानाधिकरण संबंध होता है और इसके उपवाक्य और, तथा, फिर, या अथवा, अन्यथा, किंतु, लेकिन, इसलिए आदि समानाधिकरण योजक अव्ययों से जुड़े होते हैंः जैसे-

(क) बिजली थोड़ी देर के लिए आई और वह चली गई।

(i) बिजली थोड़ी देर के लिए आई; (i) वह चली गई।

(ख) आप चाय पिएँगे या कॉफी।

(i) आप चाय पीएँगे (ii) (आप) कॉफ़ी (पीएँगे)।

(ग) जल्दी चलिए अन्यथा बहुत देर हो जाएगी।

(i) जल्दी चलिए (ii) (आपको) बहुत देर हो जाएगी।

(घ) मैं भी आपके साथ चलता किंतु मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

(i) मैं भी आपके साथ चलता (ii) मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

संयुक्त वाक्य के दो उपवाक्यों में से एक उपवाक्य के कुछ अंश कभी-कभी लुप्त हो जाते हैं। यह स्थिति तब आती है जब एक ही वाक्य के दो उपवाक्यों में समान शब्द आता है: जैसे-

(क) पिता जी प्रातः चाय पीते हैं और (पिता जी) सायंकाल को कॉफी (पीते हैं)।

(ख) मोहन कल मुंबई जाएगा और राजेश कोलकाता (जाएगा)।

3. **मिश्र वाक्य** - मिश्र वाक्य में एक मुख्य या स्वतंत्र उपवाक्य और एक या अधिक गौण या आश्रित उपवाक्य होते हैं। गौण उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य उपवाक्य पर आश्रित रहता है। मिश्र वाक्य के उपवाक्य 'कि', 'जैसा-वैसा', 'जो-वह', 'जब-तब', 'क्योंकि', 'यदि-तो' आदि व्यधिकरण योजकों से जुड़े होते हैं: जैसे-

(क) अध्यापक ने बताया कि कल स्कूल में छुट्टी होगी।

(ख) जो लड़का कमरे मैं बैठा है, वह मेरा भाई है।

(ग) जब मैं छोटा था तब साइकलि खूब चलाता था।

(घ) यदि इस बार वर्षा न हुई तो सारी फसल नष्ट हो जाएगी।

उपर्युक्त वाक्यों में वाक्य (क) में 'अध्यापक ने बताया' मुख्य उपवाक्य है और 'कल स्कूल में छुट्टी होगी' आश्रित उपवाक्य है, जिसे 'कि' योजक से जोड़ा गया है। वाक्य (ख) में 'मेरा भाई है' मुख्य उपवाक्य है और 'लड़का कमरे में बैठा है' आश्रित उपवाक्य है। वाक्य (ग) में 'साइकिल खूब चलाता था' मुख्य उपवाक्य है और 'मैं छोटा था' आश्रित उपवाक्य। वाक्य (घ) में 'सारी फसल नष्ट हो जाएगी' मुख्य उपवाक्य है और 'इस बार वर्षा न हुई' आश्रित उपवाक्य है। इस प्रकार उपवाक्यों में 'कि, जो, जब, यदि, तो' योजक-अव्यय लगे हों वे आश्रित वाक्य हैं।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं; (क) संज्ञा उपवाक्यः (ख) विशेषण उपवाक्यः और (ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(क) संज्ञा उपावाक्यः जो उपवाक्य वाक्य में संज्ञा का काम करते हैं वे संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं। इस उपवाक्य से पहले 'कि' का प्रयोग होता है और कभी-कभी 'कि' का लोप भी हो जाता है: जैसे-

1. मुझे विश्वास है कि आप दीपावली पर घर ज़रूर आएँगे।
2. तुम नहीं आओगे, मैं जानता था।

(ख) विशेषण उपवाक्य : विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में प्रयुक्त किसी संज्ञा की विशेषता बताता है। हिंदी में 'जो' (जिस, जिसे आदि) वाले उपवाक्य प्रायः विशेषण उपवाक्य होते है: जैसे-

1. आपकी वह पुस्तक कहाँ है, जो आप कल लाए थे।
2. जो आदमी पत्र बाँटता है, वह डाकिया होता है।
3. जिसे आप ढूँढ रहे हैं, वह मैं नहीं हूँ।

अधिकतर विशेषण उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ या अंत में प्रयुक्त होते हैं: जैसे-

4. जो पैसे मुझे मिले थे, वे खर्च हो गए। (प्रारंभ में)
5. वे पैसे खर्च हो गए, जो मुझे मिले थे। (अंत में)

(ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य : यह उपवाक्य सामान्यत: मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है। ये क्रियाविशेषण उपवाक्य किसी काल, स्थान, रीति, परिमाण, कार्य-कारण आदि का द्योतन करते हैं। इसमें जब, जहाँ, जैसा, ज्यों-ज्यों आदि समुच्चयबोधक अव्यय प्रयुक्त होते हैं; जैसे-

1. जब बारिश हो रही थी, तब मैं घर में था। (कालवाची)
2. जहाँ तुम पढ़ते थे, वहीं मैं पढ़ता था। (स्थानवाची)
3. जैसा आप ने बताया था, वैसा मैंने किया। (रीतिवाची)
4. यदि मोहन ने पढ़ा होता तो वह अवश्य उत्तीर्ण होता। (कार्य-कारण)

(आ) अर्थ के आधार पर

वाक्य का प्रयोग किसी-न-किसी उद्देश्य अथवा प्रयोजन से होता है। कभी हम आज्ञा देकर कोई काम करवाते हैं, कभी प्रार्थना करते हैं, कभी अपने मन की भावनाओं या इच्छाओं को प्रकट करना चाहते हैं, कभी आश्चर्य प्रकट करते हैं और कभी प्रश्न पूछते हैं। इन आधारों पर वाक्य के छह भेद किए जा सकते हैं।

(क) विधानवाचक वाक्य: कथनात्मक वाक्यों से किसी स्थिति या वस्तु के बारे में सामान्य बात कही जाती है: जैसे-

1. हमारा विद्यालय प्रात: आठ बजे खुलता है।
2. दीपावली अक्तूबर या नवंबर में मनाई जाती है।
3. सुरेश को कल बुखार था।

(ख) निषेधात्मक वाक्य : इसमें किसी कार्य के निषेध का बोध होता है : जैसे-

1. मेरा मित्र आज स्कूल नहीं आया।
2. आप बाहर न जाएँ।
3. मैं यह काम नहीं कर सकता।

(ग) आज्ञार्थक वाक्य : इस वाक्य द्वारा किसी व्यक्ति को आदेश, आज्ञा या निर्देश देकर काम करवाया जाता है; जैसे–

1. मोहन को बुलाओ।
2. यहाँ शोर मत करो।
3. यह पत्र डाकखाने में डाल देना।

(घ) विस्मयादिबोधक या मनोवेगात्मक वाक्य: इस प्रकार के वाक्यों में वक्ता के विस्मय, इच्छा, संदेह, हर्ष, घृणा आदि मनोभावों का बोध होता है; जैसे–

1. अहा! कितना सुंदर दृश्य है।
2. ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे।
3. शायद आज बारिश हो।
4. छि:! कितना गंदा स्थान है।

(ङ) प्रश्नवाचक वाक्य: इस वाक्य में प्रश्न पूछने की सूचना मिलती है: जैसे–

1. क्या आप कल मेरे यहाँ आए थे ?
2. तुम्हारा नाम क्या है ?
3. क्या तुम्हारा स्कूल कल बंद है ?

(च) संकेतवाचक वाक्य: इसमें एक बात या कार्य का होना या न होना किसी दूसरी बात या कार्य के होने या न होने पर निर्भर होता है: जैसे–

1. यदि वर्षा होती तो फसल होती।
2. अगर तुम परिश्रम करते तो उत्तीर्ण हो जाते।

वाक्य-विश्लेषण

वाक्य-विश्लेषण या वाक्य-विग्रह का अर्थ है, किसी वाक्य के घटकों को अलग-अलग करना और उनका पारस्परिक संबंध बताना।

सरल वाक्य के विश्लेषण में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. उद्देश्य + उद्देश्य का विस्तार।
2. विधेय : (क) क्रिया + (ख) क्रिया का विस्तार।
   + (ग) कर्म + (घ) कर्म का विस्तार।
   + (ङ) पूरक + (च) पूरक का विस्तार।

वाक्य-विश्लेषण के कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं।

सरल वाक्य: रमेश के भाई मोहन ने अपने दो मित्रों को दीपावली की मिठाई खिलाई।

उद्देश्य		विधेय					
उद्देश्य	उद्देशय का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	पूरक का विस्तार
मोहन ने	रमेश के भाई	खिलाई	दीपावली की मिठाई	मित्रों को	अपने दो	X	X

संयुक्त वाक्य विश्लेषण

संयुक्त वाक्य के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

उद्देश्य			विधेय					
उद्देश्य		उद्देशय का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	समुच्चयबोधक अव्यय
उपवाक्य 1	मित्र	मेरा	जाता है	रोज़ विद्यालय	X	X	X	और
उपवाक्य 2	(वह)	X	पढ़ता है	मन लगा कर	X	X	X	

1. प्रधान उपवाक्य।
2. प्रधान उपवाक्य का समानाधिकरण।
3. समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय।

संयुक्त वाक्य : मेरा मित्र रोज़ विद्यालय जाता है और मन लगाकर पढ़ता है।

मिश्र वाक्य का विश्लेषण

मिश्र वाक्य के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. मुख्य उपवाक्य।
2. आश्रित उपवाक्य।
3. आश्रित उपवाक्य का प्रकार और मुख्य उपलाक्य से संबंध।
4. समुच्चबोधक अव्यय।

मिश्र वाक्य : जब मैं छोटा लड़का था तब साइकिल खूब चलाता था।

उपवाक्य	उपवाक्य का प्रकार	समुच्चयबोधक अव्यय	उद्देश्य	उद्देश्य का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म और कर्म का विस्तार	पूरक और पूरक का विस्तार
1. साइकिल चलाता था	मुख्य उपवाक्य	तब (व्यधिकरण)	मैं	X	चलाता था	खूब	साइकिल	X
2. मैं छोटा	आश्रित उपवाक्य (क्रिया विशेषण)	जब (व्यधिकरण)	मैं	X	था	X	X	छोटा लड़का

वाक्य-रचना की अशुद्धियाँ

वाक्यों में प्रायः निम्नलिखित प्रकार की अशुद्धियाँ पाई जाती हैं:

1. उपसर्ग और प्रत्यय का अनावश्यक प्रयोग

अशुद्ध	शुद्ध
(क) वह बेफुजूल की बातें करता है।	वह फ़ुजूल की बातें करता है॥
(ख) उनकी सौजन्यता से यह कार्य संपन्न हुआ है।	उनके सौजन्य से यह कार्य संपन्न हुआ है।

2. 'ने' कारक चिह्न का प्रयोग न होना

अशुद्ध	शुद्ध
(क) तुम मोहन को देखे हो।	तुमने मोहन को देखा है।
(ख) शीला सारे फल खाई है।	शीला ने सारे फल खाए हैं।
(ग) कौन पत्र लिखा है।	किस ने पत्र लिखा है।

3. प्रयोजनपरक वाक्यों में कारक चिह्नों का अशुद्ध प्रयोग

(क) मैंने घर जाना है।	मुझे घर जाना है।
(ख) राम ने मकान खरीदना है।	राम को मकान खरीदना है।

'ना' अंत्यक्रिया रूपों के लिए कर्ता के साथ कारक चिह्न 'को' अथवा 'ए' विभक्ति लगाई जाती है।

4. सर्वनाम में संबंधसूचक 'रे' और परसर्ग दोनों का एक साथ प्रयोग

(क) मेरे को सौ रुपए चाहिए।	मुझे सौ रुपए चाहिए।

(ख) मोहन तुम्हारे से नहीं डरता।	मोहन तुमसे नहीं डरता।
(ग) तुम्हारे को शीला ने क्या कहा ?	तुमको (तुम्हें) शीला ने क्या कहा ?

5. सही परसर्गों का प्रयोग न होना

(क) इतनी तेज़ी में गाड़ी मत चलाओ।	इतनी तेज़ी से गाड़ी मत चलाओ।
(ख) मैंने यह कुर्सी सौ रुपए को खरीदी है।	मैंने यह कुर्सी सौ रुपए में खरीदी है।

6. बहुवचन रूपों में 'चाहिए' के स्थान 'चाहिएँ' का प्रयोग

(क) मोहन को ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिएँ।	मोहन को ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिएँ।
(ख) शीला को फल खाने चाहिएँ।	शीला को फल खाने चाहिएँ।

7. पदक्रम में अशुद्धियाँ

(क) यह असली गाय का दूध है।	यह गाय का असली दूध है।
(ख) पुलिस द्वारा चोरी का माल बरामद हुआ।	चोरी का माल पुलिस द्वारा बरामद हुआ।

8. कर्मवाच्य और भाववाच्य में अशुद्धियाँ

(क) पीटर के द्वारा पेंसिल तोड़ दी गई।	पीटर से पेंसिल टूट गई।
(ख) ऐसे सोए नहीं जाते।	ऐसे सोया नहीं जाता।

9. उपवाक्यों का सही क्रम न करना

(क) मोहनलाल, जिसे एक साल की सज़ा हुई, की अपील स्वीकृत हो गई है।	जिस मोहनलाल को एक साल की सज़ा हुई थी उसकी अपील स्वीकृत हो गई है।
(ख) श्रीवल्ली की बात जो उसने सुलक्षणा से की थी, मेरे बारे में थी।	श्रीवल्ली ने सुलक्षणा से जो बात की थी, वह मेरे बारे में थी।

10. निषेधात्मक वाक्यों में संयुक्त क्रिया का प्रयोग होना

(क) हमने पुस्तकें लौटा के नहीं दी।	हमने पुस्तकें नहीं लौटाईं।
(ख) रमेश ने यह काम कर के नहीं दिया।	रमेश ने यह काम नहीं किया।

वाक्य रूपांतरण

किसी बात को अनेक ढंग से व्यक्त किया जा सकता है। इसलिए एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य के रूप में बदला जा सकता है। रूपांतरण से वाक्य के अर्थ में परिवर्तन न हो, इस ओर ध्यान देना आवश्यक है। उदाहरण के लिए-

1. सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

उसने घर आकर भोजन किया। (सरल वाक्य)

⇒ वह घर आया और उसने भोजन किया। (संयुक्त वाक्य)

2. सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

मोहन ने मुझे जल्दी भोजन करने के लिए कहा। (सरल वाक्य)

⇒ मोहन ने कहा कि मुझे जल्दी भोजन करना है। (मिश्र वाक्य)

3. संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य

शीला ने एक पुस्तक माँगी और वह उसे मिल गई। (संयुक्त वाक्य)

⇒ शीला ने जो पुस्तक माँगी थी, (वह) उसे मिल गई। (मिश्र वाक्य)

4. विधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य

रमेश आज विद्यालय गया है। (विधानवाचक वाक्य)

⇒ रमेश आज विद्यालय नहीं गया। (निषेधवाचक वाक्य)

5. निषेधवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य

सुरेश ने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है। (निषेधवाचक वाक्य)

क्या सुरेश ने यह पुस्तक पढ़ी है ? (प्रश्नवाचक)

अथवा

क्या सुरेश ने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है? (निषेधात्मक प्रश्नवाचक वाक्य)

6. विधानवाचक वाक्य से विस्मयादिबोधक वाक्य

यह बहुत ही सुंदर दृश्य है। (विधानवाचक)

⇒ वाह! कितना सुंदर दृश्य। (विस्मयादिबोधक वाक्य)

7. पदभेद का परिवर्तन

मोहन को समुद्र में तैरना नहीं है। (क्रिया)

⇒ मोहन को तैरना नहीं आता। (संज्ञा)

8. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य

मैं यह काम नहीं कर सकता। (कर्तृवाच्य)

⇒ मुझसें यह काम नहीं हो सकता। (कर्मवाच्य)

प्रश्न-अभ्यास

1. वाक्य में उद्देश्य और विधेय से क्या अभिप्राय है ? उदाहरण सहित समझाइए।
2. पदक्रम के बारे में बताते हुए उसके नियम बताइए।
3. अन्विति से क्या तात्पर्य है ? उदाहरण सहित समझाइए।
4. रचना की दृष्टि से कितने प्रकार के वाक्य होते हैं ? उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।
5. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद उदाहरण सहित समझाइए।
6. पदबंध किसे कहते हैं ? इसे स्पष्ट करते हुए पदबंध के प्रकारों का विवेचन उदाहरण सहित कीजिए।
7. पदबंध और उपवाक्य का अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
8. संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्यों का अंतर उदाहरण सहित कीजिए।
9. मिश्र वाक्य के उपवाक्यों का विवेचन उदाहरण देकर कीजिए।
10. **सही कथनों पर सही (✓) का और गलत कथनों पर गलत (X) का निशान लगाइए।**

    (क) कर्ता के विषय में जो कुछ कहा जाता है, वही विधेय होता है।

    (ख) कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है।

    (ग) भाववाच्य के केवल सकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है।

    (घ) पदक्रम बदलने से वाक्य का अर्थ बदल सकता है।

    (ङ) वाक्य का वह अंश जो क्रिया की सूचना देता है, उद्देश्य कहलाता है।

    (च) संयुक्त वाक्य में केवल एक ही क्रिया होती है।

    (ज) हिंदी के वाक्य में पहले कर्ता, फिर क्रिया और अंत में कर्म आता है।

    (झ) यदि कर्ता के बाद कोई परसर्ग लगा हो तो उस कर्ता से क्रिया की अन्विति नहीं होती।

    (ञ) 'तुम बाहर मत बैठो' निषेधात्मक वाक्य है।
11. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।**

    (क) तुम उसको देखो हो।

    (ख) मैंने घर जाना है।

    (ग) शीला तुम्हारे से नहीं डरती।

    (घ) थॉमस के द्वारा किताब फाड़ दी गई।

    (ङ) कृपया मुझे छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें।

    (च) उसे एक फूलों की माला खरीदनी है।

    (छ) मैंने यह किताब पचास रुपए को खरीदी है।